पढ़ना सिखाने की गाड़ी एक ही पहिये पर चलाना

मीनू पालीवाल

सन् 2017 में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा 'सीखने के प्रतिफल'* नाम का दस्तावेज़ विकसित किया गया। इसे विकसित करने का प्रमुख कारण इस तरह व्यक्त किया गया है, 'शिक्षकों में इसकी स्पष्टता का अभाव है कि किस प्रकार का सीखना आवश्यक है और वे कौन-से मापदण्ड हैं जिनसे इसे मापा जा सकता है।

किस प्रकार का सीखना आवश्यक है, इसकी अस्पष्टता कक्षा 1 और 2 में पढ़ना सिखाने के तरीकों को देखकर साफ तौर से समझ में आती है। इन कक्षाओं के बच्चे जब तक सारे अक्षर और मात्रा नहीं सीख जाते तब तक उन्हें पढ़ने के लिए किताबें या कहानियाँ नहीं दी जातीं। कक्षा 1 और 2 के लिए कुल 14 प्रतिफल चिह्नित हैं। इनमें से एक प्रतिफल है, बच्चे 'हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं'। इसके बावजूद कक्षा 1 और 2 का ज़्यादातर समय वर्णमाला और बारहखड़ी दोहराने में जाता है। जब उपरोक्त दस्तावेज़ को दिखाकर

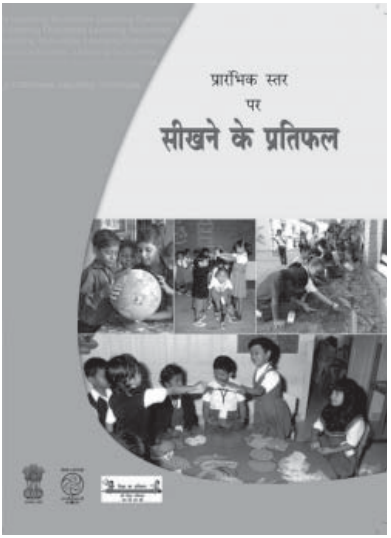

चित्र एन.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट से साभार।

शिक्षकों से इस मुद्दे पर बात की जाती है तो अक्सर वे यह कहते हुए पाए जाते हैं कि पहले अक्षर-मात्रा तो सीख जाएँ, फिर इन चीज़ों पर काम करेंगे। यह सब देखकर इस बात की ज़रूरत महसूस होती है कि 'सीखने के प्रतिफल' को समझकर, उन्हें अपने काम में लागू किया जाए।

* *'सीखने के प्रतिफल' दस्तावेज़ को निम्नलिखित लिंक पर देखा जा सकता है - https://ncert.nic.in/learning-outcome.php*

शब्द-पहचान

अक्सर शिक्षक इस बात को सुनकर चौंक जाते हैं कि बच्चों को शुरुआत से ही किताबें पढ़ना सिखाया जाना चाहिए। यह आम धारणा है कि यदि बच्चों को अक्षर ही नहीं पता तो वे कहानी कैसे पढ़ेंगे। हम स्कूल में पढ़ना सिखाते वक्त इस बात को भूल जाते हैं कि बच्चा घर पर अपनी ज़रूरत के लिए कैसे-कैसे प्रयास करता है और बहुत-से शब्दों से परिचित हो जाता है। बच्चा बिना अक्षर ज्ञान के अपनी पसन्द की चॉकलेट, बिस्कुट, पास की दुकान का नाम अदि पहचानने लगता है। गौर करें कि यहाँ मैं 'शब्द-पहचान' की बात कर रही हूँ, 'शब्द-पढ़ना' की नहीं। आप 'सीखने के प्रतिफल' में देख सकते हैं कि उसमें भी 'शब्द पहचान' का ज़िक्र है।

हम सिद्धान्त के तौर पर यह मानते हैं कि बच्चा जो जानता है, उसके आगे वह सिखाना है जो वह नहीं जानता। परन्तु कक्षा में ऐसा नहीं दिखता। यदि हम सिद्धान्त को व्यवहार में मानते तो हमारी कक्षा के श्यामपट्ट पर वे शब्द दिखाई देते जिनसे बच्चे परिचित हैं। कृष्ण कुमार कहते हैं कि हिमाचल प्रदेश में 'ह' से 'हिम' नहीं पढ़ाते, राजस्थान में 'र' से 'रेत' नहीं पढ़ाते। ज़्यादातर स्कूलों में 'क' से 'कबूतर' ही सुनने को मिलता है। सोचिए, जिस बच्चे का नाम 'कल्याण' है, उससे भी जब 'क' से शुरू होने वाला एक शब्द बताने के लिए कहा जाए और वह बच्चा अपना नाम न बोलकर, 'क' से 'कबूतर' कहे, तो आप क्या महसूस करेंगे।

बच्चे जब पढ़ना सीखते हैं तो वे अर्थ बनाने के लिए अक्षर-मात्रा सम्बन्ध के अलावा कुछ युक्तियों का भी इस्तेमाल करते हैं जो 'सीखने के प्रतिफल' में साफ तौर से लिखा हुआ है। पढ़ना सिखाने की गाड़ी नीचे दिए चार पहियों पर चलती है, पर स्कूलों में केवल एक पहिये 'अक्षर-मात्रा' पर इसे चलाने की पुरज़ोर कोशिश की जा रही है जिसकी वजह से पढ़ना और समझना, दो अलग-अलग बातें हो गई हैं।

- केवल चित्रों या चित्रों एवं प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना
- शब्दों को पहचानना
- पूर्व-अनुभव और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना
- अक्षर-ध्वनि सम्बन्ध का इस्तेमाल करना

आइए, कक्षा 1 और 2 में पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में 'सीखने के प्रतिफल' को कुछ उदाहरणों से समझते हैं।

क्या पढ़ना केवल अक्षर-मात्रा जोड़ना है?

आइए, इन्हें अनुभव करके समझते हैं। नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए

और स्टॉपवॉच पर देखिए कि आपको अनुच्छेद पढ़ने में कितना समय लगा।

अनुच्छेद 1

हरिनिये दारिमुखो के जेनो केब्रिधो, रोदे बोसे चेते खायभीजे काज सिद्धों। माथा नेडेगान कोरेकि जेनोकि सोंगीत, भाबदेखे मोने होबेकि ज़ेनोकि पोंदित। बिड-बिड किजेबोके नई तार ओर्थो, "आकाशे झूल झोले काठे ताई गोर्तो।" टेको माथा तेते ओथे गायछोते मोलोगधा घोर्मो, रेगे बोले।

अनुच्छेद 2

जाएगी हो शुरू प्रक्रिया की आवेदन ही महीने इस तो गया किया जारी नोटिफिकेशन पर पदों 428 हज़ार 31 लाख 1 महीने इस अगर है सकता जा किया जारी नोटिफिकेशन लिए के वेकेंसी मेगा महीने इस कि यानी जाएगा किया जारी में मार्च या फरवरी नोटिफिकेशन ये होगा जारी।

अनुच्छेद 3

सरकारी नौकरी की तलाश कर रहे युवाओं के लिए रेलवे बम्पर वेकेंसी निकालने वाला है। हाल ही में रेल मंत्री ने बेरोज़गारों के लिए बड़ा ऐलान किया था। उन्होंने कहा था कि रेलवे में 2 लाख 30 हज़ार पदों पर भर्तियाँ की जाएँगी। बता दें कि 2 लाख 30 हज़ार नए पदों पर होने वाली भर्ती में आर्थिक रूप से कमज़ोर उम्मीदवारों को 10 फीसदी आरक्षण दिया जाएगा।

आपने पाया होगा कि अनुच्छेद 1 को पढ़ने में आपको अनुच्छेद 2 से ज़्यादा समय लगा। क्या आप ऐसा होने का कारण सोच सकते हैं? 'सीखने के प्रतिफलों' में 'शब्द-पहचान' का ज़िक्र है। आपको अनुच्छेद 1 को पढ़ने में ज़्यादा समय शब्दों को न पहचान पाने के कारण लगा। साथ ही, पढ़ने में आपसे बहुत-सी गलतियाँ भी हुई होंगी। प्रश्न यह है कि पढ़ना यदि अक्षर-मात्रा को जोड़ना भर है तो ऐसा नहीं होना चाहिए था। पढ़ने में समय ज़्यादा लगा, यह तो फिर भी समझ आता है परन्तु अनुच्छेद 1 को पढ़ने में गलतियाँ क्यों हुई होंगी? क्योंकि पहले अनुच्छेद को पढ़ने में आप सिर्फ अक्षर-मात्रा की युक्ति का इस्तेमाल कर पा रहे थे।

इस तरह अनुच्छेद 2 को पढ़ने में अनुच्छेद 3 की तुलना में ज़्यादा समय लगा होगा। अब ज़रा सोचिए कि ऐसा क्यों हुआ होगा। 'सीखने के प्रतिफल' में सन्दर्भ की मदद से अनुमान लगाना लिखा गया है। अनुच्छेद 2 में आप शब्द पहचान पा रहे थे लेकिन उल्टा लिखा होने के कारण अनुमान लगाने में परेशानी हो रही थी जिसके कारण आपकी पढ़ने की रफ्तार कम हो गई। अनुच्छेद 2 को पढ़ने के दौरान आपने यह भी अनुभव किया होगा कि उल्टा लिखा होने के बावजूद आपने कहीं-कहीं

सही क्रम में पढ़ा है। यदि आपके साथ ऐसा नहीं हुआ तो बहुत सम्भावना है कि अनुच्छेद थोड़ा और लम्बा होता तो आप यह ज़रूर महसूस कर पाते।

तीसरे अनुच्छेद में आप शब्द-पहचान, सन्दर्भ, पूर्व-अनुभव और जानकारी के आधार पर अनुमान व अक्षर-मात्रा – इन चारों युक्तियों का प्रयोग कर रहे थे इसलिए आप तेज़ी-से अर्थ के साथ पढ़ पा रहे थे।

अब आप अपने इस पढ़ने के अनुभव की तुलना एक बच्चे के पढ़ना सीखने की प्रक्रिया से करें। एक 6 वर्ष के बच्चे के लिए पढ़ना सीखने का अनुभव वैसा ही रहा होगा जैसा आपका अनुभव अनुच्छेद 1 को पढ़ने का रहा। शायद आपने उस अनुच्छेद को पूरा पढ़ा भी न हो। जब आप अनुच्छेद 1 को पढ़ रहे थे, तब क्या आपको अच्छा लग रहा था? शायद नहीं। जब बच्चे पढ़ने के लिए सिर्फ एक ही युक्ति 'अक्षर-मात्रा' का इस्तेमाल करते हैं तो उनकी पढ़ने की गति काफी कम हो जाती है, ठीक वैसे ही जैसे आपने अनुच्छेद 1 को पढ़ते समय अनुभव किया। और पढ़ने की गति का, अर्थ न बना पाने से सीधा सम्बन्ध है। इसे अनुभव करने के लिए आप कोई वाक्य (थोड़ा लम्बा और आपके मानसिक स्तर की किसी किताब का) धीरे-धीरे पढ़कर देखिए। आप पाएँगे कि धीरे पढ़े जाने के कारण आपको उसका अर्थ बना पाने में परेशानी महसूस हो रही है।

इस दस्तावेज़ की प्रस्तावना में यह भी लिखा है कि पढ़ने की शुरुआत अर्थपूर्ण सामग्री से और किसी उद्देश्य के लिए होनी चाहिए। अब प्रश्न यह उठता है कि सन्दर्भ के आधार पर अनुमान लगाने के लिए और शब्द-पहचान ज़्यादा कर पाने के लिए भी तो पढ़ते आना चाहिए। लेकिन पहली कक्षा के बच्चों को तो पढ़ना आता नहीं फिर हम कैसे अनुमान और शब्द-पहचान के कौशल को बढ़ाने पर काम करेंगे?

किसी भी कहानी-कविता को पढ़ाते हुए यदि हम सभी युक्तियों यानी अनुमान, शब्द-पहचान, अक्षर-मात्रा सम्बन्ध और चित्रों का उपयोग करेंगे तो बच्चों को अर्थपूर्ण रूप से पढ़ना सिखा सकते हैं। एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित 'बरखा' शृंखला की किताबें इस सन्दर्भ में बहुत उपयोगी हैं। इन किताबों में पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में आप बच्चों को सभी युक्तियों को इस्तेमाल करते देखते हैं। 'पढ़ने' की इस प्रक्रिया में बच्चे बहुत-से शब्दों को बदल देते हैं। शब्द बदलना इस बात को दर्शाता है कि बच्चे जो पढ़ रहे हैं, वह उन्हें समझ आ रहा है। कृष्ण कुमार अनुमान लगाने को, पढ़ना सीखने की कुँजी कहते हैं। यह अनुमान हम बहुत-से कारकों के आधार पर लगाते हैं। जैसे - पूर्व-अनुभव और जानकारी, शीर्षक, चित्र, सन्दर्भ, वाक्य संरचना की मदद आदि।

अनुमान लगाना – कुछ उदाहरण

बच्चे पढ़ते समय अर्थ की खोज के लिए इन सभी युक्तियों का इस्तेमाल कैसे करते हैं, आइए, इसे कुछ उदाहरणों की मदद से समझते हैं।

उदाहरण 1

लिखा था – तोता धीरे-धीरे चल रहा था।

पढ़ा गया – तोता धीरे-धीरे नींग रहा था।

बुन्देलखण्डी में 'चलना' को 'नींगना' बोलते हैं। यदि बच्चा सिर्फ चित्र देखकर बोल रहा होता तो वह कहता - 'मिट्ठू हल्के-हल्के नींग रहा था' (बच्चा पूरा वाक्य बुन्देलखण्डी में बोल रहा होता)। परन्तु उसने ऐसे नहीं पढ़ा। यह इस बात का प्रमाण है कि बच्चा सिर्फ चित्र देखकर नहीं बोल रहा है, वह अक्षर-मात्रा और शिक्षक द्वारा सुनाई गई कहानी, दोनों को ध्यान में रखकर कहानी को पढ़ने की कोशिश कर रहा है। अक्सर स्कूलों में चित्र पठन को पढ़ना नहीं समझा जाता इसलिए कक्षा 1 और 2 के बच्चों को पढ़ने के लिए 'बरखा' सीरीज़ की किताबें नहीं दी जातीं। लेकिन इस उदाहरण में आप देख सकते हैं कि बच्चा किस तरह चित्र, स्मृति, अनुमान और अक्षर-मात्रा की मदद से पढ़ने की कोशिश कर रहा है।

उदाहरण 2

लिखा था - काजल और माधव ने मिलकर पिल्ले के घाव साफ किए फिर उसके घावों पर पट्टी बाँधी।

कक्षा 6 से 8 के छह बच्चे मेरे साथ बैठकर 'बरखा' सीरीज़ की 'मोनी' नाम की किताब पढ़ रहे थे। एक बच्चा जो किताब के सबसे करीब था, वह ऊपर लिखी लाइन को पढ़ रहा था। वह धीरे-धीरे अक्षर जोड़ते हुए वाक्य को 'काजल और माधव ने मिलकर पिल्ले के घाव साफ किए फिर उसके घावों पर' तक पढ़ पाया और 'पट्टी' शब्द पर अटक गया। एक बच्चा जो थोड़ी दूर बैठा था, उसने आगे का वाक्यांश बोला– 'पट्टी बाँधी'।

अब प्रश्न यह उठता है कि इस बच्चे को किताब ठीक-से नहीं दिख रही थी, इसके बावजूद उसने कैसे बता दिया कि आगे क्या लिखा है; और दूसरा प्रश्न यह है कि जिस बच्चे के सामने किताब थी, वह बच्चा क्यों नहीं पढ़ पाया। जिस बच्चे के सामने किताब थी, वह सिर्फ अक्षर-ध्वनि सम्बन्ध की युक्ति का इस्तेमाल कर रहा था और अनुमान न लगा पाने के कारण हम यह कह सकते हैं कि उसे अपने पढ़े का अर्थ समझ नहीं आ रहा था; और दूसरा बच्चा सुनकर और किताब की ओर देखकर अनुमान लगा पाया। अनुमान लगाने में इस बात की भी भूमिका रही होगी कि 'पट्टी बाँधी' लिखने के लिए कितनी जगह लगेगी क्योंकि जो बच्चा थोड़ी दूर बैठा था, उसे अक्षर

ठीक-से नहीं दिख रहे होंगे। परन्तु यदि आप 'पट्टी' शब्द न पढ़ पाने का कारण 'पट्टी' में इस्तेमाल आधे अक्षर को समझते हैं तो आप अपनी कक्षा के बच्चों के साथ 'बरखा' सीरीज़ की 'चावल' कहानी पढ़ें। आप पाएँगे कि वे बच्चे जो आधे अक्षर के शब्द पृथक रूप से पढ़ने में परेशानी महसूस करते हैं, वे कहानी में आए हल्दी, प्याज़, डिब्बों, कच्चा जैसे आधे अक्षर वाले शब्द आसानी-से पढ़ ले रहे हैं। ऐसा वे कहानी के सन्दर्भ की मदद से कर पा रहे होंगे।

एक और उदाहरण देखिए - कक्षा 1 का एक बच्चा जो जल्दी सीखता है, उसने 'आ' और 'ग', दोनों अक्षर पहचान लिए पर इन दोनों को जोड़कर कौन-सा शब्द बनेगा, यह नहीं बता पा रहा था। उसे मैंने संकेत दिया कि इन दोनों को जोड़कर गर्म/जलने से सम्बन्धित शब्द बनेगा। बच्चे ने तुरन्त उत्तर दिया, "आग।" हमने लेख की शुरुआत में पढ़ने में अनुमान की भूमिका के बारे में बात की है। यहाँ आप इस भूमिका को बेहतर रूप से समझ पा रहे होंगे।

उदाहरण 3

इस चित्र को देखकर पहली कक्षा के बच्चे यह बता देते हैं कि बिल्ली ऊन के गोले को देखकर उसे गेंद समझ रही है। हालाँकि, बच्चों का ध्यान कभी-कभी ऊन के गोले के धागे पर दिलाना पड़ता है वरना वे भी उसे गेंद ही समझते हैं। आवरण पृष्ठ पर ही कहानी का प्लॉट समझ आ जाता है जिससे बच्चों को कहानी समझने में आसानी होती है।

उदाहरण 4

यह चित्र 'मीठे-मीठे गुलगुले' कहानी से लिया गया है। कहानी में जमाल की मम्मी आटा गूँथ रही होती हैं तभी पड़ोस का मदन एक सवाल पूछने आता है। मम्मी उसे सवाल समझाने लगती हैं। उतने में जमाल खुद आटा गूँथने लगता है और इस चक्कर में आटे में पानी ज़्यादा हो जाता है। सागर (मध्य प्रदेश) के बच्चे

चित्र-1: उदाहरण 3

चित्र-2: *उदाहरण 4*

इस कहानी और चित्र के आधार पर चित्र के नीचे लिखे वाक्य को इस तरह पढ़ते हैं - उसके हाथों में आटा छप गया/लिपट गया।

उदाहरण 5

इस चित्र को दिखाकर जब मैंने बच्चों से पूछा, "इस बिल्ली की दो-दो मुण्डी क्यों बनी हैं? क्या प्रिंट में गड़बड़ हो गई है?" तो कक्षा 1-2 के बच्चों ने बता दिया कि "नहीं मैडम, वो गेंद ढूँढ़ने के लिए जल्दी-जल्दी इधर-उधर देख रही है। यह दर्शाने के लिए चित्र ऐसा बनाया गया है।" हाँ, कभी-कभी इतने साफ शब्दों में नहीं बता पाते पर आप समझ जाते हैं कि बच्चे यह तो अच्छे से समझ रहे हैं कि प्रिंट की गलती नहीं है। सम्भवत: बच्चों को टी.वी. पर कार्टून देखने से इस चित्र को समझने में मदद मिली होगी।

चित्र-3: *उदाहरण 5*

चित्र-4: *उदाहरण 6*

उदाहरण 6

'बरखा' सीरीज़ की किताबों में अर्थ की खोज के बहुत-से मौके उपलब्ध हैं। चित्र-4 *कूदती जुराबें* किताब से लिया गया है। इस कहानी में एक बच्चा तालाब में नहाने जाता है और अपने मोज़ों को वहीं उतारकर रख देता है। किनारे पर रखे उसके मोज़ों में मेंढक घुस जाते हैं। नहाने के बाद तालाब से बाहर आकार वह बच्चा देखता है कि उसकी जुराबें कूद रही हैं। जब यह कहानी मैं कक्षा 2 के दो बच्चों के साथ पढ़ रही थी तो मैंने बच्चों से पूछा कि "जुराबें क्यों कूद रही हैं?" दो उत्तर आए - "जादू से" और "जुराब में मछली घुस गई है।" मैंने पूछा, "मछली पानी के बाहर कितनी देर रह पाएगी?" तो बच्चे बोले, "अरे हाँ! यह मछली तो नहीं हो सकती है।" मैंने उस वक्त कोई उत्तर नहीं दिया। किताब आगे पढ़ी। किताब के अन्तिम पन्ने पर पेड़ पर जुराबें और दो मेंढक दिखाई देते हैं। बच्चों का ध्यान मैंने मेंढक की ओर दिलाया। पर बच्चे उस वक्त भी मेंढक से जुराबों के कूदने को नहीं जोड़ पाए। मुझे इस बात पर काफी आश्चर्य हुआ। मैंने अगले दिन यही कहानी पूरी कक्षा के साथ पढ़ने की योजना बनाई। अगले दिन जैसे ही मैंने यह किताब दिखाई, पिछले दिन वाले दोनों बच्चे बोले, "मोज़े में मेंढक है।"

अब ज़रा सोचिए कि ऐसा क्यों हुआ, कैसे हुआ। क्या बच्चे कहानी खत्म हो जाने के बाद भी उस कहानी के बारे में सोच रहे होंगे? यदि मैंने पिछले दिन खुद ही बता दिया होता कि मोज़े में मेंढक है तो क्या बच्चों को यह सोचने का मौका मिलता? हमें बार-बार खुद को यह याद

दिलाते रहना होगा कि अन्तिम उत्तर बता देना शिक्षा का उद्देश्य नहीं है, उद्देश्य है मौके देना।

'बरखा' शृंखला की किताबें

अक्सर शिक्षक इन किताबों को बच्चों द्वारा पढ़े जाने पर कहते हैं कि बच्चे तो चित्रों को देखकर बोल रहे हैं, पढ़ नहीं रहे। इसलिए वे इन किताबों से पढ़ना सिखाने की बजाए वर्णमाला और बारहखड़ी का ही इस्तेमाल सही समझते हैं और जिन भी चीज़ों से बच्चों को पढ़ने में मदद मिल सकती है, उन्हें धीरे-धीरे हटाते जाते हैं। जैसे 'बरखा' सीरीज़ की किताबों का इस्तेमाल न करना, 'आज की बात' जैसी गतिविधि न करवाना (इस गतिविधि में बच्चों द्वारा बोली कोई बात लिखी जाती है और बच्चे मिलकर उसको उँगली रखकर पढ़ते हैं), कविता पर उँगली रखकर न पढ़वाना। इन सब गतिविधियों को न करवाने के कारण जो गिनवाए जाते हैं – बच्चे पढ़ थोड़े रहे हैं, कविता तो उन्हें याद है, 'आज की बात' का वाक्य भी याद है और चित्रों को तो पढ़ा नहीं जाता। इस सोच की वजह से 'पढ़ना' और 'समझना', दोनों अलग-अलग बातें बन जाती हैं। सोचिए, यह वाक्य कितना अजीब लगता है - 'बच्चे पढ़ तो लेते हैं पर समझ नहीं पाते'!

हमें दस्तावेज़ में दिए 'सीखने के प्रतिफलों' और उनके साथ दी गई प्रस्तावित गतिविधियों को अपनी कक्षा में सायास जगह देनी होगी तभी हम पढ़ने में समझने को शामिल कर पाएँगे। 'बरखा' सीरीज़ की किताबों की टैग लाइन- 'पढ़ना है समझना' – पढ़ना सिखाने की हमारी पारम्परिक दृष्टि को एक नया परिप्रेक्ष्य देती है।

मीनू पालीवाल: अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, सागर, म.प्र. में 2017 से काम कर रही हैं। इससे पहले वे 6 वर्ष तक आईसीआईसीआई बैंक में कार्यरत रहीं। मन में आने वाले सवालों के जवाब की तलाश में वे शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ीं। प्राथमिक कक्षा के बच्चों के साथ काम करने में रुचि।

सभी चित्र: एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित 'बरखा' शृंखला से साभार।

पढ़ना है समझना